अध्याय - प्रथम

शोध परिचय

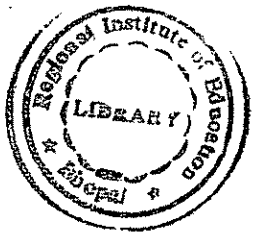

प्रथम अध्याय

शोध परिचय

प्रस्तावना :

प्राचीन समय में शिक्षक ही शिक्षण का सर्वेसर्वा माना जाता था और उसी के अनुसार शिक्षा का स्वरूप होता था। किन्तु आज के आधुनिक एवं तकनीकी युग में ऐसा नहीं है। फिर भी विधि का ज्ञान शिक्षार्थी नही अब भी शिक्षक ही माना जाता है।

शिक्षा हमें इस योग्य बनाती है कि परिस्थितियों के अनुरूप उचित निर्णय लेकर सही मार्ग का चयन करें और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न अवसरों पर सही विकल्प का चुनाव कर सकें। शिक्षक पर ही समाज की उन्नति निर्भर होती है। भवन निर्माण में जो स्थान ईटों का है, राष्ट्र निर्माण में वही स्थान शिक्षक का है। क्योंकि शिक्षक बालकों को समुचित शिक्षा प्रदान कर देश का भविष्य उज्जवल करता है।

शिक्षक वह धुरी है जिसके चारों और शैक्षिक गतिविधियाँ क्रियाशील रहती हैं। शाला की उन्नति अथवा विकास के लिए उचित पाठ्यक्रम, श्रेष्ठ पाठ्य पुस्तक उत्तम शिक्षा साधन तथा उपयुक्त शाला ग्रहों की आवश्यकता तो है ही परंतु उससे ज्यादा आवश्यकता है, उपयुक्त शिक्षक की क्यों कि किसी भी राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली में सबसे महत्वपूर्ण स्थान शिक्षक का ही होता है। अच्छे शिक्षकों के अभाव में किसी भी देश की शिक्षा पद्धति निर्जीव और निस्तेज हो जाती है। शिक्षक के लिए यह कहना सार्थक होगा कि वह समाज का शिल्पि होता है। राष्ट्र के मूल्यों को अक्षुण्ण बनाए रखने के हेतु प्रयासरत रहता है। वह समाज का सेवक भी है जो समाज की धड़कन को पहचान कर उसे नया जीवनदान देता है। नित्य नवीन प्रेरणा भी प्रदान करता है। शिक्षक में ऐसी अनूठी एवं अलौकिक शक्ति है, जिसके बल पर वह छात्रों में शीर्षस्थ सद्‌गुणों का बीजारोपण कर उसका प्रारब्ध तक बदल सकता है।

बालक के सर्वांगीन विकास में शिक्षक का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षक ही समग्र विद्यालयीन योजनाओं को संपूर्ण व्यावहारिक रूप प्रदान करता है। जिस प्रकार

विद्यालय जीवन में प्रधानाध्यापक मस्तिष्क के रूप में होता है। उसी प्रकार शिक्षक आत्मा स्वरूप होता है।

आत्मा बिना शरीर (विद्यालय) निर्जीव होता है। शिक्षक ही विद्यालय जीवन का गतिदाता है। विद्यालय जीवन में शिक्षक का महत्व निम्न बिंदुओं से स्पष्ट होता है।

भविष्य निर्माता :–

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसारः– "अध्यापक वह प्रकाशपुंज है जो स्वयं जलकर औरों को भी प्रकाश प्रदान करता है।"

डॉ. जाकिर हुसैन के अनुसारः– "वास्तव में शिक्षक हमारे भाग्य निर्माता है, समाज अपने विनाश पर उनकी उपेक्षा कर सकता है।"

प्रो.हुमायु कबीर ने लिखा है, "शिक्षक राष्ट्र के भाग्य निर्णायक होते है व ही पुनः निर्माण की पूंजी है।"

संस्कृति का पोषक :–

गारफोर्थ के अनुसार :– "शिक्षक के माध्यम से ही संस्कृति पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती है। समाज की परम्पराये नवयुवको को ज्ञात होती है, तथा वही नये एवं रचनात्मक उत्तरदायित्व उर्जाये छात्रों को सौंपता है।"

राष्ट्र का मार्गदर्शक :–

डॉ. राधाकृष्ण के अनुसार :– "समाज में अध्यापक का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ को बौद्धिक परम्परये और तकनीकी कैशल पहुँचाने का केन्द्र है और सभ्यता के विकास को प्रज्जवलित रखने में सहायता देता है, वह यभ्यता एवं संस्कृति का संरक्षक तथा परिमार्जन कर्ता है। वह बालक का ही मार्गदर्शन नहीं वरन् संपूर्ण राष्ट्र का मार्गदर्शक है।"

शिक्षा का रक्षक :

शिक्षक का राष्ट्र की प्रगति में महत्वपूर्ण स्थान है कहा भी जाता है कि एक आदमी हत्या करके एक जीवन का अंत करता है किन्तु शिक्षक गलत शिक्षा देकर संपूर्ण परिवार की हत्या करते है तथा संपूर्ण राष्ट्र का अहित करते है। इसलिये शिक्षक का परम कर्तव्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना है जो राष्ट्र की प्रगति के आधार बन सके।

शिक्षक अपने सद्प्रयासों से बालक का सफल मार्गदर्शन कर उसके अस्तित्व को संतुलित कर उसे सफल नागरिक बनाता है। इस रूप में वह न केवल बालक का ही कल्याण करता है, वरन् समूचे समाज तथा राष्ट्र की भलाई करता है। इसलिये तो भारतीय दर्शन में शिक्षक को ब्रम्हा का रूप दिया गया है। यह ब्रम्ह स्वरूप शिक्षक ही सृजनात्मक तथा विंध्वसात्मक शक्तियों का प्रदाता तथा स्त्रोत है। इसी की प्रदत्त शिक्षा के आधार पर हम कल्याणकारी तथा विनाशकारी शक्तियों का निर्माण करते है। इसलिये कहा जाता है कि यदि विनाश पर आ जाये तो शिक्षक एक चिकित्सक भवन निर्माता तथा पुजारी से भी अधिक विनाश कर सकता है। एक अध्यापक के प्रभाव का कहाँ अंत होता? कहा नही जा सकता क्योकिं वह अपने छात्रों पर अपने प्रभावों की अमिट छाप छोड़ देता है।

अध्यापक की भूमिका :–

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का उद्देश्य होना चाहिये, कि वह प्रत्येक व्यक्ति में सामान्य शिक्षा एवम व्यक्तिगत संस्कृति का विकास करे उसकी शिक्षण की योग्यताओं को विकसित करे तथा उन सिद्धांतों के प्रति उसे जाग्रत बनाये जो स्नेहपूर्ण मानवीय सम्बंधो के लिये आवश्यक हो तथा जिसमें उत्तरदायित्व की भावना हो और जो शिक्षण के माध्यम से सहयोग दे और समाज के लिये आदर्श बने। शिक्षक का स्तर यूनेस्को का प्रस्ताव अध्यापक शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्य है–

इन उद्देश्यों को तीन भागों में बांटा जा सकता है–

1. बोधात्मक

2. कौशल

3. अभिवृत्ति

1. **बोधात्मक उद्देश्यः–**

- समाज की संरचना, कार्य एवं अन्तः क्रिया का ज्ञान।
- बालविकास एवं अधिगम प्रक्रिया का बोध।
- विकासशील बालकों की समस्याओं का बोध।
- विद्यालयीन संगठन एवं प्रशासन का ज्ञान।
- परीक्षा एवं मूल्यांकन की विधियों का ज्ञान।

2. **कौशल उद्देश्यः–**

- विभिन्न शिक्षण विधियों के प्रयोग की योग्यता एवं कौशल।
- शिक्षण विधियों का विकास एवं विषय के प्रयोग की योग्यता।
- प्रभावपूर्ण कौशल एवं अभिप्रेरणा
- शिक्षण के विशेष उद्देश्यों को निर्मित करने की योग्यता।
- मूल्यांकन प्रविधियों के प्रयोग की योग्यता तथा पाठ्यसहगामी क्रियाओं के संगठन की योग्यता।

3. **अभिवृत्ति से संबंधित उद्देश्यः–**

- शिक्षण व्यवसाय के प्रति स्वस्थ एवम सकारात्मक दृष्टिकोण।
- शिक्षण समस्याओं के प्रति वैज्ञानिक एवं वस्तुपरक दृष्टिकोण।
- अध्यापक में प्रजातांत्रिक एवम राष्ट्रीय दृष्टिाकोण होना चाहिए।
- छात्रों की समस्याओं के प्रति सहानुभूति पूर्ण दृष्टिकोण तथा उन्हें उचित अनुमति देना।

प्रभावी शिक्षण क्या है?

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षण प्रभाव शीलता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। गहन निरीक्षण व आलोचनात्मक विश्लेषण ही संपूर्ण शिक्षण कार्यक्रम की प्रभावशीलता की धुरी होती है और प्रत्यक्ष प्रभाव छात्रों में पीरलक्षित होता है। शिक्षण प्रभाविता से अध्यापक की कर्यक्षमता व व्यवसाय के प्रति समर्पित दृष्टिकोण का विकास होता है। यहां प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि यहा प्रभावशीलता के विभिन्न घटकों को जोडकर शिक्षण प्रभावशीलता का पता लगाने का प्रयास है, जबकि इन्ही विभिन्न घटको द्वारा ही शिक्षण की प्रभावशीलता में वृद्धि होकर उसमें ठोस परिवर्तन आता है, इसी से अध्यापक की कर्यक्षमता व व्यवसाय के प्रति समर्पित दृष्टिकोण का विकास होता है।

शिक्षा में शिक्षक, शिक्षार्थी व पाठ्यक्रम एक त्रिमुखी प्रक्रिया है, पाठ्यक्रम या विषयवस्तु के माध्यम से शिक्षक शिक्षार्थी में वांछित परिवर्तन लाने का प्रयास करता है, शिक्षण प्रक्रिया के सफलता की सीमा का आधार शिक्षण व शिक्षार्थी की प्रकृति है। इन दोनो को सम्मिलित योग्यताओ तथा क्षमताओं आदि का प्रभाव इन प्रक्रिया की सफलता निर्धारित करता है। बालक जो कुछ सिखता है उसका प्रभाव जहां एक ओर उसकी अमूर्त शक्तियों पर पडता है वही उसका व्यवहार भी परिवर्तित होने लगता है।

शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा शिक्षार्थी में पाठ्यवस्तु ही स्थानांतरित नही की जाती अपितु शिक्षक अपने व्यक्तित्व की छाप भी छोड़ते है, एक अच्छा शिक्षक छात्रों का प्रभावी मार्गदर्शन कर उन्हें अच्छा मानव बनाने का प्रयास करता है। उसमें अच्छे गुण अध्यरोपित करने का यथाशक्ति प्रयास करता है और वही शिक्षक प्रभावी शिक्षक कहलाते है, जो शिक्षण प्रक्रिया के दौरान निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये विषयवस्तु का शिक्षार्थी को अधिगम कराकर वांछित उद्देश्यों की प्राप्ती के साथ उसमें अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन करने की क्षमता रखे।

शिक्षक प्रभावशीलता क्या है?

शिक्षक प्रभावशीलता अधिक भ्रामक प्रत्यय है इसकी परिभाषा करना भी कठिन है क्योंकि प्रभावशाली सापेक्षित प्रत्यय है। शिक्षक प्रभावशीलता से तात्पर्य शिक्षण कौशल व्यावसायिक योग्यताओं तथा शिक्षण उद्देश्यों को पाप्त करने से है इसको समझने के लिये दो शब्दों को समझना आवश्यक है– शिक्षक तथा प्रभावशीलता दार्शनिकों ने शिक्षक की परिभाषा देने का प्रयास किया है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर – उन्होनें शिक्षक के लिये एक जलते हुए दीपक की उपमा दी है।

"एक जलता हुआ दीपक दूसरे दीपकों को जला सकता है" छात्रों में अपेक्षित योग्यता होती है, उनका संचालन करना शिक्षक का कर्तव्य होता है। एक अध्ययनशील व्यक्ति ही दूसरे को अध्ययन के लिये प्रोत्साहित कर सकता है। शिक्षक जीवनपर्यंत छात्र रहता है।

प्रभावशीलता एक सापेक्षित प्रत्यय है। यह किसी मानदण्ड की ओर संकेत करता है।

डी.जी.रायन तथा मिजल ने प्रभावशीलता के लिये तीन मानदण्डों का उल्लेख किया है।

1. योग्यता मानदण्ड
2. प्रक्रिया मानदण्ड
3. परिणाम मानदण्ड

1. **योग्यता मानदण्ड** :– योग्यता मानदण्ड का संबंध शिक्षक की व्यक्तिगत योग्यता से है। जैसे– बुद्धि, प्रवणता, व्यक्तित्व, मूल्य अभिवृत्ति तथा अभिरूचियों का विकास किया जा सकता है।

2. **प्रक्रिया मानदण्ड** :– इसका संबंध कक्षा शिक्षण क्रियाओं तथा व्यवहारों से होता है। शिक्षण कौशल प्रक्रिया मानदण्ड का ही अंग है। पृष्ठपोषण प्रविधियों द्वारा

शिक्षण कौशल, शिक्षण व्यवहार, पाठ्यवस्तु प्रस्तुतिकरण का विकास किया जा सकता है और शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

3. **परिणाम मानदण्डः**— शिक्षक की प्रभावशीलता सबसे महत्वपूर्ण मानदण्ड होता है शिक्षण से क्या परिणाम हुए जिनका संबंध छात्रो की निष्पत्तियों तथा अभिवृत्तियों के विकास से होना है। उपरोक्त दानों ही मानदण्डों का मूल्यांकन भी इनके द्वारा किया जाता है। छात्र शिक्षक का सही आलोचक माना जाता है।

प्रभावशाली शिक्षक के गुणः—

प्रभावशाली शिक्षक के अधोलिखित गुण होने चाहिये।

1. माध्यमिक विद्यालय के अध्यापक को आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक वृद्धि के संदर्भ में राष्ट्रीय उद्देश्यों का ज्ञान होना चाहिए। इससे अध्यापक मे ऐसी योग्यता विकसित होगी जिसके द्वारा उचित विद्यार्थियों की वर्तमान पीढ़ी को भारत के प्रबुद्ध नागरिकों के रूप में प्रशिक्षित करें।
2. उसे व्यवसाय की चुनौती की सराहना करनी चाहिए तथा उन संभावनाओं का पता लगाना चाहिय जिससे कमियों की क्षति पूर्ति हो सके, इस कार्य के द्वारा व्यवसाय के प्रति आशावादिता की वृद्धि होगी तथा अध्यापन में तात्कालिक सुख प्राप्त होगा।
3. उसे देश के लिये उपने कार्य की महत्ता का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिये और उसे अपने व्यवहार पर गर्व होना चाहिये।
4. शिक्षक को प्रजातांत्रिक मूल्यों का सम्मान करना चाहिये जैसे अपने से अलग विचार रखने वालों का सम्मान।
5. अध्यापक का स्वस्थ्य संवेगात्मक विकास होना चाहिये और उसे प्रसन्न रहना चाहिये, जीवन सुख संक्रमणीय है। यदि एक अध्यापक प्रसन्न स्वभाव या

प्रसन्नचित रहता है तो छात्र उसके विभिन्न रूपों को अपने जीवन में उपयोग कर सके।

6. शिक्षक को अभिभावक एवं समुदाय से सतत संपर्क रखना चाहिये। उसे समुदाय का नेतृत्व करना चाहिये। उसे विद्यालयीन क्रिया कलापों को समुदाय के सुधार के रूप से संगठित करना चाहिये।

7. अध्यापक को सभी प्रकार की सूचनाये रखनी चाहिये तथा उसे जिज्ञासु होना चाहिये। पढ़ाये जाने वाले विषय के अलावा सामयिक पत्रिकाओं को पढ़ाने की रूचि होनी चाहिये।

8. उसमें उच्च कोटि की संवाद क्षमता, स्पष्टता, शुद्धता तथा तार्किकता होनी चाहिये।

9. उसे मनोविज्ञान के व्यावहारिक पक्ष को समझना चाहिये, उसे किशोरों की विशेषताओं जैसे – शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक तथा उनकी आवश्यकताओं की जानकारी हो तथा उनके समाधान करने की योग्यता रखनी चाहिये।

10. उसे विद्यालय के प्रति शुभचिन्तक होना चाहिये, अन्य अध्यापको के साथ मिलकर विद्यालय की अच्छी स्थिति को अनुरक्षित करना चाहिये।

इस प्रकार एक सफल अध्यापक केवल अध्यापन में ही रूचि नही लेता वह सामुदायिक क्रियाएं, समाज सेवा, सहयोगी, सहगामी क्रियाओं आदि सब में बराबर रूचि लेता है। रूचि विभिन्नता अध्यापक के लिये अनिवार्य गुण है। छात्र उसी अध्यापक पर अधिक विश्वास करते है, जिनके व्यवहार में एकरूपता होती है। क्षण में रूष्ट और क्षण में प्रसन्न होने वाले अध्यापक को छात्र कभी भी सम्मान नही दे पाते है। एक सफल अध्यापक में आत्मविश्वास का होना नितांत आवश्यक है।

समाज प्रगतिशील होता है, उसकी प्रगति के साथ ही साथ शिक्षक को भी प्रगतिशील होना चाहिये।

समस्या का चयन :–

माध्यमिक शिक्षा के सार्वभौमिक पहुँच और गुणवत्ता को सुधारने के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में हर तीन किलोमीटर की दूरी पर एक माध्यमिक विद्यालय स्थापित किया गया है। इन विद्यालयों में शिक्षण कार्य सम्पन्न कराने हेतु शिक्षकों की आवश्यकता हुई। अतः सरकार द्वारा पढ़े लिखे युवा को इसे कार्य हेतु चुना गया। सरकार द्वारा निश्चित वेतन पर एक निश्चित सत्र के लिये कक्षा शिक्षण सपन्न कराने हेतु शिक्षकों को नियुक्त किया जाता है। अर्थात् निश्चित सत्र एवं वेतन पर नियुक्त शिक्षक संविदा शिक्षक कहलाते है। वर्तमान युग में शिक्षकों की नियुक्ति संविदा शिक्षक के नाम से ही होती है। इन शिक्षकों की नियुक्ति विभिन्न राज्यों में निम्न कारणों से की जाती है।

1. माध्यमिक शिक्षा के सार्वभौतिक पहुँचके लिये।
2. माध्यमिक शिक्षा के गुणवत्ता में सुधार के लिये।
3. हर तीन किलोमीटर की दूरी पर स्कूल खोले जाने के कारण कार्यकुशल योग्य पढ़े लिखे शिक्षकों की कमी को पूरा करने हेतु ।
4. ग्रामीण क्षेत्रों में गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने के लिये।

कुछ राज्यों में शिक्षकों को एक विश्चित समयाभाव के बाद नियमित शिक्षक के रूप में नियुक्त किये जाने का प्रावधान भी है। अतः यह माना जाता है शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के बाद वह अपने अध्यापन कार्य रूचिपूर्ण रूप से सम्पन्न करें। एवं बच्चों को कक्षा में सक्रिय बनाकर रखने के लिये दक्षता संवर्धन एवं ए.एल.एम. जैसे प्रशिक्षण दिये जाते है। बच्चे शिक्षको का अनुसरण करते है तथा अपने कार्य में शिक्षकों का मार्गदर्शन लेते है।

शिक्षक क्या अपने कार्य का समापन, चालन उचित तरीके से करने में सक्षम है? क्या ये शिक्षक अपना कार्य पूर्ण निपुणता से सम्पन्न करते है?

क्या शिक्षक का शिक्षण प्रभाव है? क्या शिक्षक बच्चों पर अपनी अमिट छाप छोड़ने में सक्षम है? शिक्षक का कक्षा शिक्षण कितना प्रभावी है? इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुये शिक्षकों की प्रभावीता का अध्ययन करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।

शिक्षकों के शिक्षण से शिक्षण प्रक्रिया, शिक्षा तथा छात्रों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने हेतु समस्या का चयन किया गया।

समस्या का कथनः—

"बैतूल जिले के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन"

शोध के चर :— शोध समस्या में निम्न चर है—

- आश्रित चर :— शिक्षक प्रभाविता।
- स्वतंत्र चर :— आयु, लिंग, अनुभव, शैक्षिक योग्यता।

समस्या का सीमांकन :—

- इस अध्ययन में बैतूल जिले के भुलताई तहसील को शामिल किया गया है।
- इस अध्ययन हेतु माध्यमिक विद्यालयों के मात्र सौ (100) शिक्षकों को ही चुना गया है।
- इस अध्ययन में शिक्षक एवं शिक्षिकाओं दोनों का ही चयन किया गया है।
- इस अध्ययन में शासकीय विद्यालयों का ही चयन किया गया है।
- इस अध्ययन में विवाहित, अविवाहित शिक्षको का चयन किया गया है।

- इस अध्ययन में सेवा अन्तर्गत प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का चयन किया गया है।

शोध के उद्देश्य :–

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षको में शिक्षक प्रभाविता के घटकों के सहसंबंध का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में लिंग के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में उम्र के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में अनुभव के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में वैवाहिक स्थिति के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
6. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में जाति के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
7. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक योग्यता के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
8. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में व्यवसायिक योग्यता के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
9. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में सेवा अन्तर्गत प्रशिक्षण के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।

शोध कार्य की परिकल्पनाए :–

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में शिक्षक प्रभाविता के घटकों में सार्थक संबंध नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में लिंग के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नही है।
3. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में उम्र के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नही है।
4. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में अनुभव के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नही है।
5. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में वैवाहिक स्थिति के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नही है।
6. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभाविता पर जाति का सार्थक प्रभाव नहीं है।
7. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षक प्रभाविता पर शैक्षिक योग्यता का सार्थक प्रभाव नहीं है।
8. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षक प्रभाविता पर व्यावसायिक योग्यता का सार्थक प्रभाव नहीं है।
9. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षक प्रभाविता पर सेवा अंतर्गत प्रशिक्षण का सार्थक प्रभाव नहीं है।